SHREE SWAMINARAYAN

# श्री स्वामिनारायण

JANUARY 2005



श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रातःकालीन् मंगला आरती एवं धनुर्मास धुन में सम्मिलित भगवद्-भक्त समुदाय ।

प्रकाशकः- श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद-१

Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1

नवा वणझार ( सरखेज ) में श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अवशर पर यज्ञनारायण को आहुति समर्पित करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके साथ में अहमदाबाद के महंत स्वामी, स्वयंप्रकाशदासजी स्वामी तथा प.भ. श्री वासुदेवभाई गज्जर।





## आचार्य के स्म में अंतिम प्रसंग

श्री स्वामिनारायण मंदिर धूळकोट, हालार ( मूलीदेश ) में शिखरबद्ध मंदिर की भूमिपूजन विधि श्री नरनारायणदेव देश के छठ्ठे पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलों से हुई थी ( दि. १४-१०-२००४ )



શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

તસવીરકાર :- પ.પૂ. નિવૃત્ત આચાર્ય શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી




संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
( महंत स्वामी )

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश $ 100
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह ( मास ) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र ( प्रधान पंडित )
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद


# SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण


वर्ष - ४ जनवरी -२००५


## अ नु क्र म णि का


| | | |
|---|---|---|
| १. | अरमदीयम | ४ |
| २. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा | ५ |
| ३. | आशीर्वचन का आस्वाद | ६ |
| ४. | उदार सहजानंद | ८ |
| ५. | भक्तवत्सल भगवान श्री स्वामिनारायण | १० |
| ६. | शुद्ध भोजन | १२ |
| ७. | दिव्य जीवन व्यवहार | १३ |
| ८. | जीवन में परिवर्तन करने वाला सत्संग | १४ |
| ९. | सुखकारक : यह चंदन हो ऐसा नहीं | १५ |
| १०. | भागवत धर्ममर्मज्ञ वैराग्यमूर्ति श्री निष्कुलानंद मुनि | १६ |
| ११. | संत कृपा से सुख मिलता है | १८ |
| १२. | भगवान श्रीहरि से आचार्य पद का ऐश्वर्य | २० |
| १३. | समाचार वृत्तांत | २१ |



प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

# अस्मदीयम्

## तन्त्रीश्री की तरफ से.....

भगवान सूर्यनारायण का धनराशी में प्रेवश ही धनुर्मास कहा जाता है । इस महीने में भगवान श्रीकृष्ण अपने बडे भाई बलराम तथा सुदामा आदि मित्रों के साथ क्षिप्रा नदी के तट पर सांदीपनिऋषि के आश्रम में चौसठ दिन में चौसठ कला सीखने के बाद इसी धनुर्मास में धनुर्विद्या सीखें थे । धनुर्मास में विद्यार्थी बनकर भगवान विद्याभ्यास करते थे । उसी की अद्‌भुत स्मृति के लिए आजभी अपने मंदिरो में भगवान विद्यार्थी बनकर विद्याभ्यास करते हों ऐसा सुंदर श्रृंगार किया जाता है । जैसे विद्यार्थी को पाठशाला जाने के लिए प्रभात काल होता है वही ध्यान रखकर भगवान को भी भोजन की थाली पहले रखदी जाती है ।

इस पवित्र महीने में जगत के जीवो के लिये कुमुहूर्त होता है, लेकिन भगवान के भक्तों के लिए भजन करने का समय है । करीब तीस वर्ष से अहमदाबाद मंदिर की पाठशाला के विद्वान संतो द्वारा मंगल प्रभातकी धुनि आज सफलता के सोपान पर अग्रसर होकर अहमदावाद मंदिर में अद्‌भुत शोभा तथा पवित्रता फैलाने वाला एक आनंद उत्सव का मंगल प्रसंग बन गया है । गुलाबी, ठन्डी में छोटे बालक से लेकर वृद्धो तक सभी लोग भोर में मंदिर के प्रांगण में आ जाते हैं ।

इस वर्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को विदेश के प्रवास में होने से प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री प्रतिदिन प्रातःकाल आकर मंगला आरती, श्री नरनारायणदेव की अपने हाथो से स्वयं उतारते हैं । इसका दिव्यलाभ सभी हरिभक्त लोगों को मिलता है । साथ ही प.पू. आचार्य महाराजश्री धुनि जबतक चलती है तबतक सभा मंडप में विराजमान होकर सभी को दर्शन का लाभ देते है और स्वयं धुनि करते रहते हैं । भगवान श्रीहरि वचनामृत में कहते है कि - "भगवान की भजन करना इससे बड़ी कोई बात नहीं है" इसलिये भगवान की प्रतिदिन भजन करनी चाहिए । सत्संग करना और सेवा करना इन दोनो कार्य से भगवान की प्रसन्नता सभी को मिलेगी ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

*- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

*जयश्री स्वामिनारायण*



## प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रु परेखा

### दिसम्बर - २००४

१. नवा वणझर ( सरखेज ) गाँव में नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण ।

प.भ. वल्लभभाई पोपटभाई के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।

२. नवा वणझर गाँव में ( सरखेज ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथो से ।

विरमगाव श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्वहाथो से ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा-पालडी अमदावाद में नूतन मंदिर के भूमि पूजन स्वहाथों से ।

४-५. नरनारायणनगर ( कच्छ ) गाँव में पदार्पण ।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

प.भ. परसोत्तमभाई विरजीभाई ( दासभाई ) के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।

प.भ. मुकुन्दभाई भोगीलाल मोदी ( श्री नरनारायणदेव युवक ओच्छवीया ) के श्री स्वामिनारायण प्रोवीझन स्टोर्स में पदार्पण, सुभाषब्रीज ।

प.भ. रमेशकुमार रणछोडलाल मारफतिया के यहाँ पदार्पण, मीठा खडी ।

प.भ. भुराभाई गोविंदभाई शेलडिया के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।

प.भ. देवचंदभाई अरजणभाई के यहाँ पदार्पण, बापुनगर.

७. ओमकार इन्टर नेशलन में पदार्पण, नवरंगपुरा ।

पी. रिव. ( सिलीका मार्केटिंग प्रा. लि. ) मे पदार्पण, नवरंगपुरा ।

प.भ. कैलाशकुमार गढवी के यहाँ पदार्पण नवरंगपुरा ।

प.भ. पटेल घनश्यामभाई अंबालाल के यहाँ पदार्पण सोला गाँव ।

८. अहमदाबाद मंदिर में संत महादीक्षा विधि स्वहाथों से किये ।

प.भ. किशोरभाई बचुभाई काशीयाणी के यहाँ पदार्पण, इशनपुर ।

८-१२-२००४ से ७-१-२००५ अमेरिका में सत्संग प्रवास तथा सिडनी ( ओस्ट्रेलिया ) मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

# आशीर्वचन का आस्वाद

- गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापुनगर )

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वयं आचार्य की परंपरा स्थापित की जिस परम्पराके छट्ठे आचार्य श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के मुख से जिन लोगों ने आशीर्वचन सुना उनकी भाग्य को क्या कहना । धीर, गंभीर तथा मधुर वाणी द्वारा आपके मुख से मानो श्रीजी महाराज ही खुद बोल रहे हो ऐसी प्रतीति होती है हमें सुखी होने की इच्छा हो तो आज भी भगवान स्वामिनारायण विद्यमान हैं ऐसी परिकल्पना करनी चाहिए । और निरंतर उन्हीं का चिंतन करना चाहिए । श्रीजी महाराज अपने समकाल में बड़े-बड़े मंदिरो का निर्माण करवाया तथा उन मंदिरो में नरनाारयण आदि देवताओं की मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया। उन मूर्तियों में तथा श्रीजी महाराज में कोई भेद नहीं समझना चाहिए । श्रीजी महाराज ने अपने स्थान पर अपने अपर स्वरुप ऐसे दो धर्मवंशी आचार्य को प्रतिष्ठित किया । संत एवं शास्त्र दिये । अब अवशेष क्या रहा ?

श्रीजी महाराज जिस स्थल पर जिस समय में जैसी ज्ञानवार्ता करनी हो वैसी करते थे । ठीक वैसे ही प.पू. महाराजश्री भी काल, स्थल एवं हरिभक्तों की पात्रता का विचार करके आशीर्वचन का उच्चारण करते है श्रीकृष्ण भगवान के मुख से गीता भी स्थळ, काल, पात्र को ध्यान में रखकर उच्चरित हुई थी । यहाँ भी ऐसे प.पू. महाराजश्री के मुख कमल से निर्गत दो आशीर्वचन का आस्वाद लेते है ।

१. ता. ७-८-०४ एप्रोच ( बापूनगर ) मंदिर में समूह महापूजा की पूर्णाहुति की सभा प्रसंग पर एप्रोच मंदिर जब हम आते हैं तो हमें बड़ा आनंद आता है । वह इसलिये कि मंदिर का निर्माण जब से आरंभ हुआ तब से आजतक मंदिर को देखते आ रहे है । जैसे कोई पिता बालकके जन्म से युवानी तक देखा हो और बाद में वही बालक हृष्ट-पुष्ट होकर सामने आवे तो पिता को कितना आनंद आता है ? वैसे ही इस मंदिर को मैने शून्य से सर्जन होते देखा है आज यह मंदिर नाना प्रकार की स्थापत्यकला से परिपूर्ण होकर अपनी आभा विखेर रहा है । सेवा करने वाले सभी हरिभक्तों को धन्यवाद ।

सुदर्शनचक्र, कल्पवृक्ष, चिंतामणि, यह सब महाराज ने सत्संग में दिया है।

सुन्दरजीभाई सुथारने एकबार महाराज को पूछा कि श्रीकृष्ण भगवान भक्तों की रक्षा के लिए एक सुदर्शन चक्र रखते थे । आप ने क्यों नहीं कुछ रखा ? तब महाराज ने कहा, हम तो सुदर्शन से हरिभक्तों की २४ घंटे रक्षा करते रहते हैं । वह है शिक्षापत्री रुपी सुदर्शन चक्र जिसमें २१२ श्लोक रुपी सुदर्शन के दांत हैं । इस पत्री के अनुसार जो वर्तन करेगा उसकी हम २४ घंटे रक्षा करेंगे ।

नारायणघाट मंदिर में हिंडोला उत्सव था । वहाँ कीर्तन में झरमर वरसाद वाला बादल धिरा था । लेकिन बरसात होती नहीं थी । बाद में उस सभा में हम लोगों ने भगवान से प्रार्थना की, भगवानने प्रार्थना सुनकर खूब बरसात किया । इस प्रकार महाराज हमलोगों



के बीचमें रहकर हमसभी की मनोकामना पूर्ण करते है ।

महाराजने ब्रह्मचारी को सभा में खड़ा हो करके बोलने को कहा ? ब्रह्मचारीने कहा एक ही भगवान श्री स्वामिनारायण दूसरा कोई नहीं । उनकी आज्ञा पालन में सुख है । आज्ञा न मानने में दुःख है । ब्रह्मचारी इतना कह कर बैठ गया । ब्रह्मचारी ने थोड़े में सम्पूर्ण सार कह दिया । इस पर तो पारायण हो सकती हैं । एप्रोच के हरिभक्त बड़े अच्छे है । एक सभा में एक भक्त को बोलने के लिए खड़ा किया गया, उस हरिभक्त की एक बात अच्छी लगी । उसने कहा सभी लोग एक होकर प्रसन्न रहना यही शिक्षापत्री हमें सिखाती है । मंदिर के प्रतिष्ठा का समय शन्निकट आता जा रहा है । जल्दी प्रतिष्ठा महोत्सव हो, सत्संग की उत्तरोत्तर वृद्धि हो ऐसी भगवान को प्रार्थना ।

२. ता. ८-८-०४ कर्मशक्ति ( नवा नरोडा ) मंदिर में महापूजा की पूर्णाहुति प्रसंग पर : राजा कहाँ रहते है ? तो हम उत्तर में कहेंगे महल में रहते है । महल कहाँ है ? शहर में । जंगल में तो होगा नहीं । इस राजधानी का राजा कौन ? नरनारायणदेव ! भरतखंड के राजा की राजधानी अहमदाबाद शहर और महल कालुपुर मंदिर, जहाँ राजधानी होती है वहाँ सभी प्रकार की कचहरी होती है । महाराज को एक राजा मिला और कहने लगा हम शाम, दान, दंड, भेद से राज्य चलाते हैं । आप सत्संग कैसे चलाते हैं । महाराजने कहा हम भी शाम दान, दंड, भेद नीति से सत्संग चलाते हैं । राजा ने कहा कैसे ? महाराजने कहा सुनो शामनीति से हम लोगों में भगवान की बात करते हैं । दाम नीति से भगवान की मूर्ति की महिमा बताते है । भेदनीति से हम यह बताते है कि संसार की सभी वस्तुयें नाशवंत है । सत्य तो एकमात्र भगवान की शरणागति है । दंडनीति वह है जो - मर्यादा में न रहे, आज्ञा का पालन न करे, उसे दंडदिया जाता हैं । जिस स्थान पर जो बात करना चाहिए वह बात करकें सत्संग चलाना चाहिए ।

मंदिर के निर्माण में जो परिश्रम होता है उसमें आनंद आता है । अपने मंदिर के निर्माण में अपना भाव भरा हुआ है । छोटे से छोटे हरिभक्त की सेवा होती है । कोई भी अपने मंदिर में आकर प्रशंसा करे कि कितना सुन्दर मंदिर है । इस से भी उसका कल्याण ही होगा । हरिभक्तों की भावना से जो निर्माण होता है वह अलग एक प्रकार का भाव रहता है । ८-१० वर्ष पूर्व लंडन में अपना एक मंदिर बना उसके प्रतिष्ठा का उत्सव आया । स्थानिक लोग म्युनिसिपल में जाकर शिकायत किये कि मंदिर के समीप में स्कूल है और भारत देश को लोग आवाज बहुत करते हैं । कचरा फेंकते है । इसलिए उनके उत्सव को बन्द कराया जाय । उत्सवभी प्रारम्भ हो गया था । महाराज उत्सव में सम्मिलित हो गये । लोगों के हृदय में वसे और सभी में परिवर्तन आ गया । सामने से आकर कहने लगे आपके हरिभक्तों को रहने की जगह चाहिए तो हम अपना स्कूल देंगे । मंदिर निर्माण में तथा सत्संग कार्य में महाराज स्वयं प्रेरणा करते रहते हैं । सेवा करने वाले को शक्ति देते हैं । इसी प्रकार यहाँ संतो के आवास में जो सेवा करेगा वह धन्यवाद के पात्र होगा ।

मंदिर में आपसी मतभेद त्याग कर प्रवेश करना चाहिए । जूता-चप्पल, जोड़ा होता है यह सम्भव है कि जहाँ दो हों वहाँ राग-द्वेष उत्पन्न हो सकता है लेकिन मंदिर में आने के बाद यह भेद त्याग देना चाहिए । मूर्ति में रहकर महाराज प्रत्येक की श्रद्धा-भक्ति एवं भावना को अंगीकार करें । इसी प्रार्थना के साथ विराम लेता हूँ ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से ऐसी वाणी निकले तो समझना चाहिए कि स्वयं नरनारायणदेव की यह वाणी है । और आशीर्वचन है । आशीर्वचन के साथ कुछ गूढ बोध भी छिपा हुआ है नरनारायणदेव भरत खंड के राजा है । इस के साथ जेतलपुर वचनामृत के अनुसार अखिल ब्रह्मांड के भीराजा है । महाराज की शामदाम, भेद की नीति को नहीं माने तो निश्चित ही दंडनीति में हम आ जायेंगे । दंड यह अंतिम शस्त्र है । भगवान तो सभी को सुधरने का अवशर देते है । महाराज के मरजी से ही सब कुछ होता है । मालिक के आगे किसी का नहीं चलता । महाराजकी इच्छा से तथा धर्मकुल के सहारे हम सभी का कल्याण है । श्रीजी महाराज की इच्छा से ही समझने की सब को सद्‌बुद्धि प्राप्त हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणकमल में प्रार्थना ।

# उदार सहजानंद

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक
( गांधीनगर )



हम उन्हें अच्छी तरह पहचानते हैं। त्यागीवर्ग में मात्र ब्रह्ममुनि तथा मुक्तमुनि पहचानते हैं। सरस स्वभाव के सज्जन पुरुष हैं. लोक में प्रतिष्ठित प्रतिभा है। शहर के व्यापारी आदर से बोलाते हैं। नवाब भी उन्हे आदर से बलाते हैं। साधु-सन्यासी सभी संमान करते है। नमस्कार करते हैं। वे विद्वान हैं, शास्त्रज्ञ हैं, तर्कशास्त्र के प्राध्यापक हैं। बहुत सारे विद्यार्थी इनके पास पढते हैं। हम भी ब्रह्ममुनि को उनके पास पढने के लिए भेंजे थे। त्रीस वर्ष की उम्र में संसार को छोड़े है। १२ वर्ष तक मौन रहे। पानी में बाजड़ी का आंटा, नमक डालकर पीलेते थे। पैंसठ की साल में अपने संत सूरत में नवाब की बाडी लसाटपरा में रुके थे। भिक्षा मांगकर जो मिलता लाते और एकत्रित करके खाजाते थे। हाथ में ही लेकर खाते कोई पात्र नहीं लेते न किसी के सामने हाथ बढाते। व्यर्थ काल नहीं विताते। मुनि जैसा जीवन था, केवल सत्संग करते रहते। सतयुग जैसा वातावरण लगता था। संतो की एसी रीति देखकर आकर्षित हुए और प्रसन्न हो गया। क्योंकि स्वयं कठिन तप करते रहते थे। इस के बाद अडसठ वर्ष में मुक्तमुनि वहाँ गये, उनका साक्षात्कार हुआ। उनसे सत्संग करके जो ज्ञान प्राप्त किया कि सत्य बोलने वाले को आप झुठ्ठा कहते है यह बहुत बड़ा अपराध है। लोक प्रतिष्ठित व्यक्ति के ऊपर असत्य का आरोप कितना अधिक दु:ख देने वाला होता है। यह आपको ख्याल है, फिरभी मौन रहे, यही बडप्पन है।

पंचाला में संत हरिभक्तों की सभा में श्रीजी महाराज ने मुनिबाबा की बात की। अठत्तर वर्ष में हर्यानंद स्वामी सूरत गये। हर्यानंद स्वामी का स्वभाव कडक था। मुनिबाबा का यदा कदा अपमान करदेते थे। फिरभी निर्मानी स्वभाव होने के कारण सहन करते रहते थे। हर्यानंद स्वमी कीहरकत बढती गयी तब मुनिबाबाने सूरत के हरिभक्तों को यह बात बताई। हरिभक्तों ने हमें पत्र लिखा हर्यानदं को हम वापस बुला लिये।

लेकिन मुनिबावा की क्या बात? श्रीजी महाराज यह सब इसी समय क्यों कह रहे हैं?

भक्त प्रिय भगवान रंगोत्सव के लिए पंचाला गये थे। दरबार झीणाभाई के आग्रह पर संत हरिभक्तों को देश-देश सेबुला थे। सूरत से हरिभक्तों के साथ मुनिबाबा भी आये थे। एकदिन सभा में प्रसंगानुसार श्रीहरिने कहा? शास्त्र में कहे अनुसार पुरुष के गुण संतो में हो तो ही सत्संग का पोषण होगा। यह सनुकर सत्यवक्ता मुनिबाबाने श्रीजी महाराजको निवेदन करते हुए कहा।

आप ठीक कह रहे हैं महाराज, संत संत की तरह वर्तन करें तो सत्संग की वृद्धि होगी। परंतु आप दयानंद स्वामी तथा चैतन्यानंद स्वामी को सूरत भेजे थे उस समय वे हाँ के भक्तों को लूट रहे थे। सेवा श्रद्धा विना नहीं होती।

श्रीहरि मुनिबाबा के सामने देखने

लगे बाद में कहे, ए दोनो मुनि खड़े हो जांय, जो सत्य है उसे कहें । महाराज ? यह बात असत्य है । मुनिबाबा कहाँ सत्संगी है ? ऐसे असत्य भाषण करने वाले की बात को ध्यान में नहीं लाना चाहिए । हम किस हरिभक्त को लूटे है । नाम बतावें, साधू ऊपर मिथ्या आरोप लगाते शर्म नहीं आती है ।

शांत हो जाओं । हमारे लिए हरिभक्तों से सेवा की बात करते हो या नहीं ? सर्वज्ञाता श्रीहरिने कहा । दोनों संतो से कहा हमने ऐसी सेवा के लिए आप सब से कब कहा था। हाँ महाराज आपने नहीं कहा था । अधिकारी विना कोई संत हरि भक्तों को या किसी अन्य को नहीं कह सकता विना कहे जो सेवा करें उसमें हरिभक्त की सेवा की भावना होती है। कहने पर सेवा हो वह ठीक नहीं । मेरी आज्ञा विना सेवा की बात करना मेरा विरोध करना है ।

बाद में मुक्त मुनि ने कहा - वचन प्रमाणानुसार वर्तन करना ही साधु का लक्षण है । मन के अनुसार चलने वाले को दुःख होता है । त्यागी होकर त्यागमय जीवन न हो तो त्यागी न होना उत्तम है ।

आप ठीक कह रहे हैं स्वामीजी । अपने को अधिक या श्रेष्ठ बनने के लिये संतो में दौड़ होती है । लेकिन इसका परिणाम हरिभक्तों को भोगना पड़ता हैं । एसलिए आप जो शिक्षा देने की बात करे इन्हे शिक्षा दी जायेगी ऐसा श्रीहरिने कहा ?

हे महाराज ? अब मेरी बात सुनिये । नित्यानंद स्वामीने कहा तीन वर्ष हम सुरत रहे थे । वहाँ के हरिभक्त आपकी सेवा के लिए बार-बार कहा करते थे । सेवा करने की महेच्छा देखकर मैं तथा ब्रह्ममुनि, चैतन्यानंद मुनि वगैरह चार स.गु. एकत्रिक हुए थे । हरिभक्तों में गोविंद शेठ, लक्ष्मीचंद गिरधरभाई तथा भगवानदास को बुलायें । हरिभक्तों श्रीहरि के लिए कुछ सेवा करनी है । हम ने कहा श्रीहरि के लिए एक उत्तम पगड़ी तैयार करवानी है । उसमें नरनारायणनाम स्वर्णाक्षर से अंकित किया जाय । बाद में उसे श्रीहरि को भेंट की जाय । हरिभक्तं संमत हो गये । पगड़ी तैयार करवाकर गढपुर में आपको अर्पण की गयी । वही पगड़ी आपने धारण किया, लेकिन एकही बार, बाद में धारण नहीं किया । अहमदाबाद में नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा में ठाकुरजी का वस्त्र उसी का बनवा दिया था । हम जो भी किये वह सभी भक्तों के कहने पर, उनके उत्साह को देखकर तथा भावना को देखकर उसमें हमारा कोई स्वार्थ नही था हरिभक्तों का लाभ देखकर ऐसा किया था । सेवा करने का उपदेश मैने किसी को किया ही नहीं ।

नित्यानंद मुनि के बाद श्रीहरिहरानंद तथा विश्वास चैतन्यानंद की तरफ देखे तो वे लोग भी कहने लगे हम हरिभक्तों को उपदेश करते समय आपके सेवा की ही बात करते हैं ।

हमारे कहे विना आप बात करें यह चोरी कही जायेगी । यह बडप्पन की रीति नहीं हैं । मेरी आज्ञा में रहकर वर्तन करना ही श्रेष्ठत्व हैं । बड़े जिस काम को करने से डरते हैं उसे देखकर छोटे भी अनुकरण करते हैं । ऐसे सभी भक्तलोग यहाँ बैठे है इन्ही के उपानह को मस्तक पर रखो, क्षमा मांगो, कर्म दोष से छूटने का यही एकमार्ग है ।

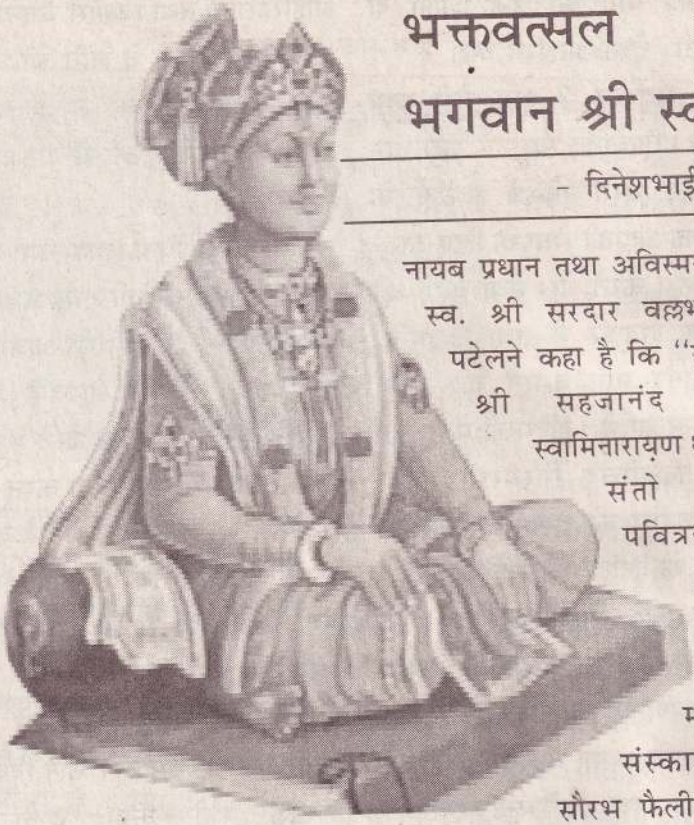
दोनो मुनि खड़े हुए भक्तों के उपानह पड़े थे उसे लेने चल दिये ।

खडे रहो कहाँ चले ? उदारदिलवाले श्रीहरिने कहा ? महाराज ? आपने जैसा कहा वैसा करने चले । महाराजने कहा, रहने दो आप हरिभक्तों के उपानह को मस्तकपर रखने चल दिये यही आपका प्रायश्चित हो गया, अब आपका दोष मेरे मस्तक पर । क्षमा निधिने दोनो संतो को क्षमाकर दिया (क्षमा वीरस्य भूषणम्) उक्ति को चरितार्थ किया । एकवार स्वयं रात्रि को जाग गये । उठकर संतो के निवास स्थान पर गये । सभी को समाचार मिला सभी उठकर आ गये प्रणाम करके बैठ गये । बाद में

*(अनुसंधान पेईज नंबर ९ पर)*

# भक्तवत्सल भगवान श्री स्वामिनारायण

- दिनेशभाई के. भगत ( अमदावाद )



२२३ वर्ष में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की प्रगति समग्र विश्व में अजोड़ कही जा सकती है । इस संप्रदाय के लाखो अनुयायी विश्व के सुप्रसिद्ध देशों में फैले हुए है । विश्व के विविध देशों में भारतीय स्थापत्य कलाओं से परिपूर्ण बेनमूना स्वामिनारायण सम्प्रदाय के स्वामिनारायण मंदिर अपनी विशिष्टता की पहचान विखेर रहे है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधीने अपने धर्म के विषय में कहा है "हिन्दुस्तान में बहुत धर्म है लेकिन स्वामिनारायण धर्म प्रशंसनीय, शुद्ध तथा आकर्षक है । हमें इस धर्म के प्रति बाहुत आदर है भारत के बड़े नायब प्रधान तथा अविस्मरणीय स्व. श्री सरदार वल्लभभाई पटेलने कहा है कि "स्वामी श्री सहजानंद तथा स्वामिनारायण धर्म के संतो के पवित्रजीवन स महा गुजरात म ा संस्कार की सौरभ फैली थी । सामान्य प्रजाजन जो पिछले वर्ग के है उन्हे सहकार देकर स्वीकार करके उत्तम संस्कार देकर पशुकोटि मनुष्य बनाने का श्रेय आपको है ।

विदेशी महानुभावों के श्री स्वामिनारायण के अवतार के विषय में कुछ वक्यव्य जानने योग्य हैं -

१. श्री हेन्री ज्योर्ज बर्ज ने अपना अनुभव बताया कि "श्री सहजानंद स्वामी कल्याणकारी कर्मवीर थे । वे किसी सत्तावाले या धनपतियों की सहायता बिना गलत मार्ग पर चलने वाले हजारों नर-नारी को सही मार्ग दिया । सहजानंद स्वामी में राजा से रंक तथा विद्वान से मूर्ख तक सभी में एकता की भावना थी । सभी समान पूजित होते रहे । विरोधियों का विरोध सामने चल नहीं सका ।

२. मि. बाउल्स कहते हैं कि "इस धर्म मे जो संत बनते हैं उन्हे चाहे कितनी भी पीड़ा दी जाय तो भी पीड़ा देने वाले का वे प्रतिकार नहीं करते" इस तरह की आज्ञा दी गयी है । यही इस धर्म की लाक्षणिकता है । इस प्रकार के उपदेश से सामाजिक उत्थान हुआ है और एक विकाश की प्रक्रिया को बल मिला है ।

३. प्रिन्स होमोकत्स प्रोफेसर लंडन युनिवर्सीटी-लिखते है कि श्री स्वामिनारायण में स्वयम्भू शक्ति थी । स्वयं अवतारी व्यक्ति होते हुए भी कभी स्वतंत्र विचरण नहीं किये, नहीं स्वतंत्र विचार था । स्वयंका जीवन सन्यस्त होते हुए भी प्रसन्नता, आनन्द तथा रमूजी मिजाज के थे । स्वयं गाते, खेलते, सभी को आनंदित करते । ऐसा व्यक्तित्व था कि देह विलय होने पर भी अस्तित्व आज भी वैसा ही है ।

४. कलेक्टर श्री विलियम्स ने बताया कि शास्त्रों में जितना बताया गया है उससे भी अधिक सहजानंद में नीति नीयम था । उन्हों ने उच्च

प्रकार की पवित्रता का उपदेश दिया और वैसा ही जीवन में व्यवहार भी किया । उन्होंने रास्ते में जाती हुई स्त्रियों को देखने के लिए मना किया था । जो प्रदेश एकदम खराब था पिछड़ा वर्ग था सभी को स्वीकारा और सभी ने उन्हे स्वीकारा सभी अपने कुत्सित मार्गो का परित्याग करके शिष्य वनें ।

नामांकित इन संदेशों से स्पष्ट होता है कि भगवान श्री स्वामिनारायण का संदेश जिन लोगों ने स्वीकार किया तथा शिक्षापत्री के अनुसार जिनका जीवन है वे आदर्श नागरिक है इस लोक में सुखी हैं ।

भगवान श्री स्वामिनारायण अपने जीवन काल में अपने कर्म का लोप होने नहीं दिया । किसी समय में श्री मूलजीभाई शेठ लींबडी वाले मूली राजा के दिवान थे । उनका प्रतिपूनम में भगवान श्री स्वामिनारायण का दर्शन करने का नियम था । पैर में बावलं का कांटा धंसने से गढडा १५ दिन बाद भगवान का दर्शन करने गये । श्रीजी महाराजने कहा कि मूलजीभाई पहले आनेवाले थे क्यों विलम्ब हुआ ? भगवान ने स्वयं बताया कि मूली राज्य का दुष्मन वारवाटिया आपको जान से मारने वाला था, इसलिए आपका शूली का दु:ख काँटा से दूर कर दिया ।'' इस प्रकार यदि हम भगवान की शरण में जायें तो योग क्षेम का वहन वे स्वयं करते है ।

ऐसा विरल प्रसंग बना है - मूलजीभाई की पत्नी अन्धी थीं । श्रीजी महाराज लींबडी उनके घर पधारे और पूछे कि यह स्त्री कौन है ? तब मूलजीभाई ने कहा कि यह मेरी पत्नी है । लेकिन आँख से दिखाई नही देता है । तब भगवान ने कहा स्त्री को अन्धा होना ठीक नहीं, उसकी सभी क्रिया कैसे सम्भव होती है । बड़ा कठिन काम है । तब मूलजीभाई ने कहा कि संसार में कितने अंधे है उनकी दैनिक चर्या कैसे होती होगी ? तब दयालु महाप्रभु ने कहा कि उसे दिखाई देतो अच्छा होगा । उसी समय उनकी पत्नी ने भीतर से आवाज दी कि यहाँ आइये और बतायीं की अब मुझे सबकुछ दिखाई देता है । मूलजीभाई बाहर आकर यह शुभ समाचार भगवान को सुनाया तो भगवान ने कहा यावत जीवन दिखाई देगा । भगवान के प्रताप से यावत् जीवन दिखाई दिया । यही भगवान की दयालुता का परिचय है । कवि की पंक्ति में कहा जाय तो इस कलियुग में भी ''परचा पूरे प्रभुजी श्री स्वामिनारायण सत्य छे ।''

---

## उदार सहजानंद

श्रीहरिने कहा - हमारे मन में एक विचार आया है आप लोगो को कहने आया हूँ ।

इस संसार में जिसके पास अधिक संपत्ति है वह अधिक दु:खी है । हम भी श्री नरनारायणदेव का मंदिर अहमदाबाद में किये है, इसके अळावां और भी बनाना है । परंतु किसी को श्रद्धा विना प्रेरित नहीं करना । श्री नरनारायणदेव की इच्छा होगी तो हो जायेगा । जन्माष्टमी के दिन लाखो रुपये का उत्सव श्री नरनारायणदेव की इच्छा से हो जाता है । कभी तो तुलसीदल से होता है । इसी प्रकार प्रभु की इच्छा से जो हो वही ठीक, कोई प्रेम से श्रद्दा से स्नेह से भेंट दे तो अच्छा है, किसी से आग्रह नहीं करना । श्री नरनारयणदेव के प्रतिश्रद्धा हो तो धरती, बाड़ी, गाँव, जगह-जमीन, जो भी दे सुखपूर्वक दें सकते हैं । लेकिन हठात् किसी के पास मांगने जातेनहीं है । यह विचार अभी आया इसलिए यहाँ कहने चला आया ।

*निज सुख अरथे लेश नहीं,*
*जतन करत जगदीश ।*
*जनसुख अरथे विचरत,*
*परमारथपथ ईश ॥*

श्रीहरि जो भी करते वह भक्तों के हित के लिए करते मानवरुप में स्वयं सर्वथा निर्मोही एवं निस्पृह रहकर कार्य किये, यही तो उनकी उदारता थी ।

# शुद्ध भोजन

- स्वा. विवेकसागर गुरु धर्मस्वरुपदासजी ( नाथद्वारा )

आज के इस आधुनिक समय में नये नये रोग बढते जा रहे है । इसका यदि कोई कारण है तो आलस्य, बाजार की खुली, बासी टेस्ट फुल खाने की सौख कितने परिवार में ऐसा नियम होता है कि प्रति रविवार को घर रसोई बनाने के बदले वे बाहर की कोई रेस्टोरेन्ट या नास्ता की लारी से वस्तु तैयार कराकर घर लाकर खाते हैं या तो होटल में जाकर खालेते हैं । लेकिन क्या वे कभी विचार करते है कि पानी छाना है सीधा सामग्री साफ की गयी है । उसमें तो स्वादिष्ट करने के लिए केमिकल का प्रयोग करते हैं । भगवान श्री स्वामिनारायण आत्मीय आश्रितों को स्पष्ट कहते हैं -

*अगालितं न पातव्यं पानीयंच पयस्तथा ।*
*स्नानादि नैव कर्तव्यं सूक्ष्मजन्तु मयाम्भसा ।*

विना गारे जल या दूथ को पीना नहीं चाहिए । जिस जल में जंतु हों उसमें स्नान नहीं करना चाहिए ।

जिसके लिए भगवान ने मना किया है उसे आज का मानव बड़े आनंद से करता है । ठन्ढा पानी पीते हैं वह क्या गारा गया है ? इसकी जानकारी है पीने वाले को क्या ? इसके बाद तो उसे रोगी होना ही है । श्री स्वामिनारायण भगवान के सत्संगी तन, मन, धन से क्यों सुखी है ? तो वे भगवान की आज्ञा में अपना जीवन जीते हैं ।

आज से सौ वर्ष पूर्व की एक घटना है । वड़ोदरा रेलवे स्टेशन में छाणी गाँव का एकहरिजन नौकरी करता था, उसका काम था जोड़ को बदलना । उस समय पाटा पदलने का ढंग दूसरा था । हरिजन स्वामिनारायण का सत्संगी था । एक दिन रेलवे के कर्मचारियों ने भोजन समारंभ रखा । उसमें भोजन अधिक बचा । भोजन समारम्भ में बडी जाति के लोग थे । बचे भोजन को सभी ने हरिजन से कहा यह अवशिष्ट तुम अपने घर लेजाना, उसने कहा कि हमारे घर इसे कोई नहीं खायेगा । साहब ने कहा यह स्वामिनारयण की कंठी पहना है । हरिजन ने कहा नहीं ? साहब ऐसा नहीं । आप मेरे साथ आइये, साहब को साथ लेजाकर दिखाया आंटा के ऊपर कीड़े चल रहे थए । और बताया कि साहब हम स्वामिनारायण के सत्संगी है हमे यह भोजन काम में नही आयेगा ।

श्रीजी महाराजने कितनी पवित्रता से जीवन जीना सिखाया था । शुद्धता में जाति की आवश्यकता नहीं, इससे जीवन स्वस्थ बनता है । साहब ने जिन-जिन वस्तुओं को लेजाने की बात की उन सभी में गन्दगी तथा जीवजन्तु को दिखाया । और पवित्रता, शुद्धता की पुष्टि की । परिणाम स्वरुप साहब की आंख खुल गयी । बाद में साहबने स्वामिनारायण के सत्संगीकी खूब प्रसंशा करते हुए घर गये ।

प्रिय भक्तजन ? कहने का मतलब यह कि बाद में भी कोई रसोई बनाओं तो सिद्धा सामग्री, शाकभाजी सभी साफ करके ही बनायें । पानी या दूध को कपड़े से गार कर ही पीयें । इससे जीवन स्वस्थ, शुद्ध, बनेगा, इसी में भगवान की भक्ति स्थिर बन सकेगी ।

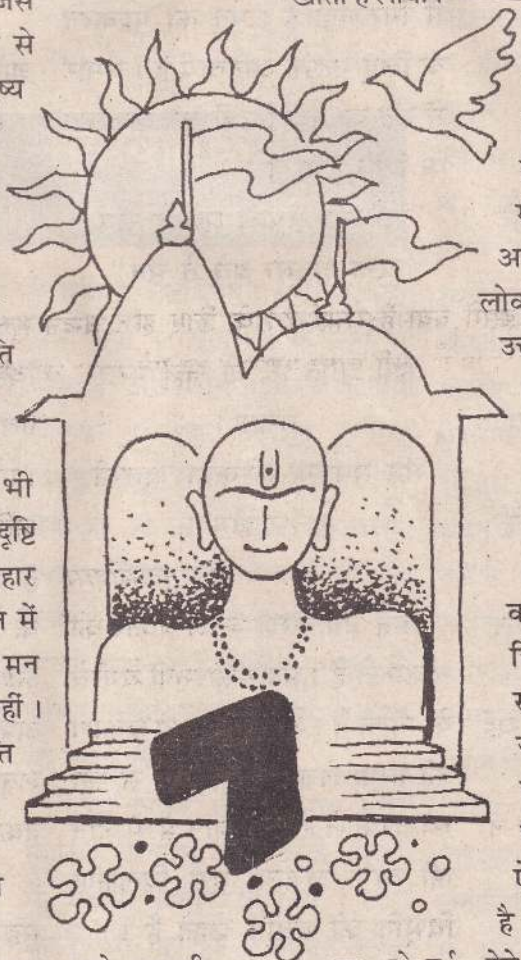
# दिव्य जीवन व्यवहार

- साधु प्रियव्रतदास ( कालुपुर, अहमदाबाद )

मनुष्य जीवन में मोह-ममता से रहित ही इस संसार में महामानव हो जाता है । महाराज जनक इस संसार में रहकर अपने सभी व्यवहार निर्लेप भाव से करते थे । जिससे उन्हे "विदेह" भी कहा जाता है । जैसे कमल पानी में रहकर भी पानी से निर्लिप्त रहता है । इसी प्रकार मनुष्य को भी जलकमलवत् व्यवहार करना चाहिए । किसी भी स्थिति में मनुष्य को आशा, इच्छा, अपेक्षा इत्यादिक से धीरे धीरे उपरत हो जाना चाहिए । इस प्रकार निर्लेप होने से बन्धन रहति हो जायेगा । पुत्रेषणा, लोकेषणा, वित्तेषणा ये सभी निर्लिप्त व्यक्ति को परेशान नहीं करतीं । किसी भी व्यक्ति या पदार्थ में ममता रहित दृष्टि हो जाती है । संसार के सभी व्यवहार करते हुए भी आशक्ति उनके मन में लेशमात्र भी नहीं रहती है । उनके मन में कर्ता का भाव तो आता ही नहीं । यह कार्य मैं कर रहा हूँ ऐसी वृत्ति नहीं आती है । संत तुलसीदासजी ने भी गूढ रहस्यों को अपने दिव्य दोहों में दर्शाया हैं।

*तुलसी जग में यूं रहो जैसे रसना मुंहमां हि ।*
*बाती घी और तेल नित फिरभी चिकनी नांहि ॥*

जगत में ऐसे निर्लेप भाव से रहना चाहिए कि सांसारिक विषय वासना थोडा भी विचलित न कर सके । जैसे मुख के भीतर जीभ निर्लेप भाव से अपने कर्तव्य निष्ठा से करती है । जीभ घी तथा तेल सभी चिकने पदार्थ खाती है लेकिन



उसे कभी कोई चिकना बना नहीं पाया । इसी प्रकार मनुष्य को सांसारिक पदार्थ मानसिक रीति से भी प्रभावित न कर शके यह ध्यान रखना चाहिए । कर्तापन का अहं नहीं आना चाहिए । जो भी कार्य करे उसमें अपने को निमित्तमात्र ही समझना चाहिए । सांसारिक सभी कार्य, व्यवहार में जैसे सामान्य मनुष्य जीवन जीता है ऐसे ही अपने जीवन का व्यवहार बनाना चाहिए । लेकिन किसी विषय के प्रति विचार में विकार नहीं आना चाहिए । संसार में निर्लिप्त रहें । सांसारिक या भौतिक पदार्थो में मोह जिसको न हो वही सच्चा अवधूत है । कबीरजीने अपने लोकोपभोग्य सरल लोकभाषा में बड़े उत्तम ढंग से समझाया है -

*चाह गई चिंतामिटी, मनवा बेपरवाह ।*
*जिनको कछु न चाहिए वे भी साहनसाह ॥*

इच्छा एवं आशा ही दुःख का कारण हैं । इच्छायें निरमूल होते ही चिन्ता दूर होने लगती है । परिणाम स्वरुप मनुष्य आनन्द से मस्ती से जीवन जी सकता है । जिन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता होती ही नही वे बादशाहों के बादशाह हैं ऐसे मस्त लोग निर्लेपभाव से जीते है । जीवन में से अपनापन निकाल देते हैं, फिर वे अपने अलमस्ती में आनंदलेते हैं । इसलिए सरलबनकर जगत में अपना व्यवहार करना चाहिए जिससे जीवन जीने का आनंद मिल सके ।

# जीवन में परिवर्तन करने वाला सत्संग

- प्रो. महादेव धोरियाणी ( राजकोट )

सत्संग का अर्थ मात्र कहना या सुनना मात्र ही नहीं, सत्संग वाणी द्वारा कम परंतु क्रिया द्वारा अधिक होता है ।

संत समागम -
जे जन करशे,
तेने प्रगटे प्रेम जोने,
जे धातुने पारस परसे,
ते तो होय हेम जो ने,
कथीर कांसु हेम न होय, कोटि
पारस परसे जोवने ।
शून्य छीप ते ऊपरना वे, सोमण
स्वाती वरसे जोने ।
अचेतने उपदेश न लागे, शिव,
ब्रह्मा समझावे जोने ।
जेनां अवला अंत:करणो, तेने
समझण मा वे जोने ।
कुबुद्धि कालय जेने रुदे, तेने न
लागे रंग जोने ।
अणद ऊजणां क्यारे न थाय, जई
जबोले गंग जोने ।
कुशकाकू टेथी शुं थाय, कण न
जड़े तेमांथी जो ने ।
मंद अभागी मूरख नर ने,
समझण आवे क्यांथी जो ने ।
पापीने प्रबोध न करिये, मौन
सहीने रहिये जोने ।
कहे प्रीतम तुलसीदल तोड़ी, प्रेत
न पूजाव जईये जोने ।

*- प्रीतमदासकी वाणी*

सत्संग यह जीवन की औषधि है । सत्संग से मन का मैल धुलजाता है । कुसंग से मनुष्य पतन के मार्ग में गिरजाता है । मन को पुष्टकरने के लिए सत्संग अनिवार्य है । संसार में संत का पदार्पण ही जन कल्याण के लिये हुआ है ।

"जगतना अंधारा धुवे ते सूर्य,
उरना अंधारा धुवे ते संत"

इसलिये कहा गया है - संत न होते जगत में, तो जल मरत संसार ।

संत समागम हरिकथा, तुलसी दुर्लभ होय ।

*- संत तुलसीदास*

संत अंत:करण के अन्धकार को धोडालते हैं । संत संसाररुपी बगीचे के माली हैं । अंधकार में से प्रकाश की तरफ लेजाय, असत् में से सत् की तरफ लेजाय, अज्ञान में से ज्ञान की तरफ लेजाय, ऐसे विलक्षण विभूति को सत्संग कहते हैं ।

मले जीवन मुक्त ते जोगिया,
त्यारे टले, तन, मन, ताप सत्संग कीजिए,
करे अवयव आरे शरीर ना
परांपणाय पंडना पाप सत्संग कीजिये ॥

*- निष्कुलानंद स्वामी*

पारसमणी के संग से कंचन
भईतरवार, तुलसी तीनुं रह गये,
धार, मार, आकार ।
ज्ञान हथोडा कर ग्रहे, सद्गुरु भये
सोनार, तुलसी तीनुं मिट गये
धारमार, आकार ॥

*- संत तुलसीदास*

जीवन परिवर्तन करने वाला सत्संग कहा जाता है । आहार, विहार, भय, मैथुन ये सभी मनुष्य एवं सभीप्राणियों में समान होता है । परंतु कुदरतने मनुष्य में बुद्धि की अधिकता होती है । मानव ने बुद्धि द्वारा खूब प्रगति की है । बाह्यजगत के साथ में मनुष्य संघर्ष करके अशांति को प्राप्त किया है । परंतु अपने भीतर के अन्त:करण के शत्रुओं पर विजयप्राप्त करने में उसे तकलीफ होती है ।

मन को जीतने के लिए सहजानंद के संदेशकश्री सहजानंद स्वामी ने इस जगत के पंचविषयो को दृढता से त्याग करने की बात की है । देवों को अप्राप्य ऐसी

*( अनुसंधान पेईज नंबर १७ पर )*



# सुखकारक
## यह चंदन हो ऐसा नहीं

गढपुर में गोपीनाथजी का मंदिर बन रहा था । लेकिन कारीगरो का वेतन बढता जा रहा था। श्रीजी महराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं था । उसी समय खोलडीयाद गाँव के राजपूत खेंगार भक्त दर्शन करने आये । महाराज को साष्टांग प्रणाम करके बैठे । महाराजने सभी समाचार पूछा और बाद में खेंगार भक्तकों पूछे आपका व्यवहार कैसा है ? खेंगार भक्त ने कहा हे महाराज ? मेरा व्यवहार बहुत उत्तम है । बाद में महाराज किसी काम के लिए बाहर गये । उस समय अक्षरमुनि कोई पुस्तक लिख रहे थे । उन्हे खेंगार भक्तने पूछा, स्वामी ? महाराज बार-बार मेरे स्वभाव के विषय में क्यों पूछते रहते हैं । स्वामीने कहा हाँ भगत ? कारीगरों का वेतन अधिक हो गया है, उसे देना है । भक्तने कहा इसमें क्या है रसोई देने के लिए ही आया हूँ, उसी समय महाराज आ गये । भक्त ने कहा महाराज ? मेरा व्यवहार बहुत उत्तम है । इसलिए जो सेवा हो उसे आप कहें । महाराजने कहा : खेंगार भगत ? कारीगरों की मजदूरी का तीन सौ रुपये देना है । भक्तने कहा अभी लाता हूँ । तुरन्त ही जाकर लाधा ठाकरके पास से पांच सौ रुपये ले आये ।

रुपये लेकर खेंगार भक्त सीधे महाराज के पास गये । उनके चरणों में पांचसौ रुपये रख दिये । और कहने लगे महाराज ? तीनसौ रुपये आपको कारीगरों का तथा सौ रुपये आपकी दवा का एवं सौ रुपये संतो की रसोई का । महाराज ने कहा ये तीन सौ रुपये बहुत है । इसी में सभी हो जायेगा लेकिन भक्त की श्रद्धा, उसने कहा नहीं महाराज संतो को लड्डू की रसोई होनी ही चाहिए ।

बाद में दरबार में संतो के भोजन की व्यवस्था की गयी । श्रीजी महाराज को उस समय कुर्सी पर विराजमान किया गया । महाराज ने मुक्तानंद स्वामी से सन्तो को भोजन परसने को कहा ।

खेंगार भगत हाथ में चन्दन का कटोरा भरले आये । और भगवान को चन्दन से चर्चित करना चाहते थे, कि मुक्तानंद स्वामीने मनाकर दिया और कहा कि महाराज का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है । इसलिए चन्दन सुखकारक नहीं होगा । आप पैर के अंगूठे में चंदन लगा दीजिए महाराज यह सुनकर कहे ? रहने दीजिये स्वामी भक्त मेरी पूजा इस चंदन से करे, यह चंदन सुखकारक नहीं है, ऐसा नहीं । इसलिए मेरी पूरे शरीर में चंदन का लेप कीजिए ।

महाराज चादर ओढे थे, उसे हटाकर सम्पूर्ण शरीर में चन्दन चर्चित करवाया । बाद में खेंगार भक्त ने आरती उतारी । महाराज भक्त पर अतिशय प्रसन्न हुए । वे खड़े होकर बांह में भरकर गले लगालिये । प्रगटपरमात्मा के आलिंगन से तथा शरीर में चर्चित चन्दन की सुगन्ध भक्त के रोम रोम में व्याप्त हो गयी । वहाँ उपस्थित संत भक्त भी भगवान - भक्त के आपसी प्रेम को देखते ही रह गये ।

# भागवत धर्ममर्मज्ञ वैराग्यमूर्ति श्री निष्कुलानंद मुनि

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट-भुज

वैराग्य मूर्ति, तपो मूर्ति निष्कुलानंद मुनि का जन्म सं. १८२२ में सौराष्ट्र देशान्तर्गत हालार देश के शेखपाट गाँव में हुआ था । पिता का नाम रामभाई माताका नाम अमृतबा एवं निष्कुलानंद के बालपन का नाम लालजी भाई था । माता पिता भक्तिनिष्ठ थे । रामानंद स्वामी के गुरु आत्मानंद स्वामीको पिता ने गुरु बनाया था । जो समाधिनिष्ठ एवं वचनसिद्ध थे । गुरुवर्यने रामभाई को ऐसा आशीर्वाद दिया था कि आपके घर महातपस्वी, वैराग्यवान का जन्म होगा । महान कार्य करके प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा इनका परिवार विश्वकर्मा जाति का था ।




लालजी कृषि तथा शिल्पकार्य करते । रात्रि में अपने गाँव से तीन गाँव दूर भादरा गाँव में जाते और वहाँ पर भक्त मूलशर्मा जिन्होंने साधु की दीक्षा लेकर गुणातीतानंद स्वामी के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की थी उनके पास सत्संग करते । श्रीहरि जब लोज गाँव में पधारे, उस समय उनकी प्रतिष्ठा सुनकर लालजी वर्णिराज का दर्शन करने लोज आये । श्रीजी के पास थोड़ा समय रहे और श्रीहरि के ऐश्वर्य का स्वयं अनुभव किये । श्रीहरिने उनसे कहा - "वैराग्य में शुकमुनि जैसे रहोगे" । रामानंद स्वामीने धर्मधुरा सौंपने का महोत्सव किया । उस समय लालजी सुथार ने श्रीजी महाराज को स्वयं का बनाया हुआ पिटारा एवं रजाई रखने का साधन भेट किया, भगवान श्रीहरि उनपर खूब प्रसन्न हुए । सं. १८५६ में लालजी के यहाँ प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उन्होने माधवजी रखा । द्वितीय पुत्र का जन्म सं. १८५९ में हुआ जिसका नाम कानजी रखा - बाद में लालजी भगवान के पास बार-बार आते और दीक्षा लेने की बात करते ।

एकबार भगवान श्रीहरि शेखपाट गाँव में लालजी सुथार के यहाँ पधारे सं. १८६० में उनके यहाँ संतो हरिभक्तों के साथ वसंतोत्सव किया । थोडे दिन के बाद श्रीहरिने कच्छ जाने की बात की तो लालजी भी तैयार हो गये । परिणाम स्वरुप लालजी गृहत्याग करके भगवान की सेवा में साथ

चल दिये । चलते समय राहखर्च (पाथेय) एवं पानी की व्यवस्था कराये क्योंकि लम्बी रण (मरुस्थल) यात्रा थी । उस समय चोरों का बहुत भय था । इसलिए कुछ धन भी साथ में लेलिए । आगे जानेपर एक भिक्षुक को (प्यासे) को अपना पानी पिला दिये । रास्ते में चोरों ने लालजी को पकडा तो कुछ नही मिला लेकिन श्रीजी ने इशारा किया तो पैर के भाग में छिपाया हुआ धन मिल गया और चोर प्रसन्न हो गये । थोडे समय चलने के बाद लालजी का कंठ सूखने लगा । श्रीजी को बताया । श्रीजीने कहा खारे समुद्र का जल पीलो । ललाजी खारे समुद्रजल को पीये और जलपात्र भरलिये । मरुस्थल में चलते चलते श्रीहरि एक बावल वृक्ष के नीचे विश्रांति करने लगे । श्रीहरि नंगे पांव चल रहे थे इसलिए पैर में कांटे चुभे हुए थे, लालजीने कहा प्रथु मैं कांटे निकाल दूँ, प्रभुकी आज्ञा हुई और उनके चरणों में सोलह चिन्ह के दर्शन हुए । प्रभु अपने ऐश्वर्य को प्रगट करते ही रहे । आगे चलते हुए आधोई गाँव आया, उस गाँव से भिक्षा मांगकर लाने को प्रभु ने कहा । लालजीने कहा प्रभु ? इस गाँव में हमारे परिचित लोग हैं । हमें पहचान जायेंगे और मेरी मजाक उडायेंगे । यह सुनकर श्रीहरिने लालजी की पगड़ी उतार कर मोंछ दाढी मुडवाकर, मुंडन कराकर, कौपीन वस्त्र देदिया और निष्कुलानंद नाम रखा । बाद में उसी गाँव में रहकर उपदेश करना तथा यमदंड नामकी पुस्तक लिखने की आज्ञा करके भुज की तरफ प्रस्थान किये । निष्कुलानंद सुखी घर के थे तथा अपने शब्दों में लिखा -

*संतो सुनो साची वारता,*
*नथी लीधो आभूख्यो भेख ।*
*जननीनो जायो कहुं छुं*
*अवश्य हतो हूँ एक ॥*

निष्कुलानंद स्वामी ने भक्तचिंतामणि, यमदंड, सारसिद्धि वचनविधि, हरिबल गीता, धिरजाख्यान, स्नेहगीता, पुरुषोत्तम प्रकाश, भक्तिनिधि, श्राद्धप्रकाश, कल्याणनिर्णय, मनांजन गुणग्राहक, चोसठपदी, हरिविचरण, हरिस्मृति, अरजी विनय, अवतार चिन्तामणी, चिन्हचिंतामणी, पुष्प चिन्तामणी, लग्न शुकुनावली, वृत्ति विवाह शिक्षापत्री पद्यरुपा, आदि ग्रन्थो को लिखा ।

सम्प्रदाय के संस्कृत ग्रंथो में काफी योगदान रहा । किन्तु गुजराती सरल शैली में लिखे ग्रन्थ अनपढ भी लाभ ले सकते हैं । भक्तचिंतामणी स्वामी के रचित ग्रन्थो में सबसे बड़ा ग्रन्थ है । वे कहते हैं कि -

*छे आ भक्तचिंतामणि नाम रे,*
*जे जे चिंतवे ते थाय काम रे ।*
*हेते गाय सुखे जे आ ग्रंथ रे,*
*तेने पुरे प्रभु मनोरथ रे ॥*

सं. १८८७ में गढडा में रहते हुए आश्विन शुक्ल १३ को यह ग्रन्थ पूर्ण किये थे । जिस में १६४ प्रकरण, ८५२७ दोहा तथा चौपाई हैं ।

निष्कुलानंद स्वामी के त्याग के वैराग्य की प्रशंसा गढड़ा के अन्तिम प्रकरण २६ वें वचनामृत में की गयी है । आत्मानंद के प्रश्नोत्तर पर श्रीहरिने कहा "कि जिसकी बुद्धि में धर्माधिक्य हो आस्तिकहो, उत्तम कर्म करता हो, वह अवश्य परलोक का फल भोगता है । ऐसी जिसकी दृढ मति हो और वह यह सोचता हो कि मैं किसी के प्रति गलत दृष्टि नहीं रखता हूँ ऐसा विचार होजायं वह कही भी जाय उसे स्त्री या धन की एषणा, बाधित नहीं कर सकती । जैसे मयाराम भट्ट, मूलजी ब्रह्मचारी, तथा निष्कुलानंद सेवा की स्थिति पर पहुंचते हुए को धन-वैभव, स्त्री आदिक पदार्थ बन्धन कारक नहीं हो सकते ।

पिता के मार्ग पर लालजी का ज्येष्ठपुत्र माधवजी गोपालनंद स्वामी के पास दीक्षा ली । जिसका नाम गोविन्दानंद रखा गया । श्रीहरि को जब स्वामीने कहा "यह निष्कुलानंद स्वामी का सेवक है तब श्रीहरि प्रसन्न होकर बोले । "सिंह की संन्तान सिंह ही होती है । गोपालानंद स्वामी ने जब सारंगपुर में कष्टभंजन देव की मूर्ति प्रतिष्ठा की उस समय गोविन्दानंद स्वामी को दृढ नैष्ठिक ब्रह्मचारी जानकर देव की आरती उतारने को कहा था ।

# संत कृपा से सुख मिलता है

- डॉ भरतभाई एन. सिंदव

प्यारे भक्तों ! वैराग्यमूर्ति स.गु. निष्कुलानंद स्वामी भक्त चिंतामणि ग्रन्थ में प्रकरण-२ में सन्तों के माहात्म्य को गाये हैं ? -

*संत कृपा ए सुख उपजे*
*संत कृपा ए सर काम,*
*संत कृपा थी पामिए*
*पूरण पुरुषोत्तम धाम,*
*काम दुधा कल्पतरु*
*पारस चिन्तामणी चार,*
*संत मसान एकय नहीं*
*में मनमां कर्यो विचार*

मध्य प्रदेश में बुरानपुर नाम का गाँव है । इस गाँव में दादा नाम के एक ब्राह्मण रहते थे । वे राजा के दिवान थे । अनेक साधुओं को भोजन कराते रहते थे । वे स्वामिनारायण के सत्संगी नहीं थे । वे जीवन में बहुत पाप भी किये थे। एकबार स्वामिनारायण के दो संत बुरानपुर गये हुए थे, इन दोनो संतो को भी भोजन कराया था । भक्त चिन्तामणि में निष्कुलानंद स्वामी कहते हैं -

*विप्र एक दिवान दादो*
*सत्संगी नहीं सोय,*
*जाने अजाड़े जमाडिया*
*संत ते स्वामिना होय,*

समय वीतता गया और एकदिन काल ग्रास हो गये । जीवन में पाप अधिक किये थे इसलिए -

*अंतकाले आविया जम ज्यारे,*
*दीधु दादाने दुःख ते वारे,*
*जे जे जनम धरिय काय पाप*
*ते ते सम्भारी कर्यो संताप,*
*दीढा दादे यमदूत ज्यारे,*
*देवी देव ने सम्भारे त्यारे,*
*सन्त महंत सन्यासी सोय*
*तेह विना जे सेव्या ता कोय,*
*एह सर्वे ने जोया संभारी*
*कहु होय हरो पीड़ा मारी,*
*एह माहिलुं एके न आव्युं,*
*ते वारे दादे शिरा डोलाव्युं ।*

इस दुःख में से छूटने के लिए दिवान ने सभी देव देवियों की याद की लेकिन कोई सहारा नहीं बना । इसलिए निराश होकर कहने लगा "हम बड़े पुरुष मानकर भोजन कराते थे, लेकिन हमें बचाने कोई नहीं आया" । ऐसा जब उसने कहा तब स्वामिनारायण के दो सन्त आकर यमदूतको कहने लगे ।

*कहे संत सुनो यमदूत*
*केम आविया आंहि कपूत,*
*जाओ वेला-वेला पाछा वळी*
*केम उभा रह्या छो सांभळी,*

संतो ने कहा । आप सब यहाँ क्यों आये हैं । जाओं यहाँ से इस जीव को यहाँ से यमपुरी जाने नही देंगे । तब यमदूतों ने कहा हे सन्तो ! यह दीवान बहुत पाप किया है । आप का सत्संगी भी नहीं है, इसलिए आपलोग रोको मत । सन्तों का तथा यमदूतों का संवाद दीवान सुनरहा था । यमदूत संतो की विन्ती करते हुए कहने लगे -

*त्यारे बोलिया यमना दूत*
*कालूशिदने करो छो तूत,*
*एह जीव है कैदी तमारो*
*सर्वे रीते एछे अमारो,*

यमपुरी में यमदूत ले गये । लेकिन साथ में संत भी गये । धर्मराज ने संतो को सम्मानित किया । दीवान के साथ सती होकर दीवान पत्नी भी गयी वहाँ पर चित्र गुप्त ने दीवान का लेखा जोखा देखा ।

*नहीं पुण्य ने पाप अनंत,*
*पुण्य एटलुं जम्या बे सन्त ।*

बहुत सारे संत-साधुओं को भोजन कराये थे, परंतु सभी निष्फल गया । क्योंकि वे सच्चे संत नहीं थे । जो पंचवर्तमान नहीं पालते उनको भोजन कराने से कोई पुण्य नहीं होता है उनकी पूजा से कोई फल नहीं मिलता है । बहुत को खिलाया पिलाया था लेकिन यमराजा के यहाँ तो दो साधुओं का नाम लिखा था । इतने

से ही उन्हें तथा उसकी पत्नी को यमयातना भोगनी नहीं पडी और भगवान के पास यमराजने भेंजदिया ।

*पछी महाराज पासे लाव्या.*
*संत होय तेह संगे आव्या,*
*त्यारे महाराज कहे सुनोजण*
*एणे आप्युं छे तमने अन्न,*
*माटे हमणा सुरपुर जाशे*
*पछी बैकुंठ नो वास थाशे,*
*ते दीठु सर्वे समाधिवाने*
वणी जे कह्युं ते सुण्यु जे काने ।

यमराज के आदेश से दोनों जीवात्माओं को धाम में ले गये । दोनों संत भी साथ में थे महाराज ने कहा ये जीव आप को अन्न दिये हैं इसलिए अब बैकुंठ के अधिकारी हैं ।

*कहे आज थकी नव वरसे*
*दादो सत्संग मां देह धरशे,*
*थासे सत्संगी नारी ने नर*
*पछी जाशे तो ब्रह्मनगर,*

निष्कुलानंद स्वामी विश्वास के साथ कहते हैं कि -

*ए तो दीठुं छे अमारो नेण ।*
*नथी जुठूं एके वेण ॥*

स्वामी कहते हैं कि यह सब हम अपने आँखो से देखे है । हम कोई असत्य नहीं कह रहे हैं । -

*ब्रह्मानंद स्वामीने भी कहा है*
*संत परमहितकारी जगत माही*
*संत परम हितकारी*

## जीवन में परिवर्तन करने वाला सत्संग

मनुष्य की दुर्लभ शरीर मिली है । तो क्यों हम स्फूर्ति और त्याग मयजीवन न जीवें ? चारो तरफ प्रसन्नता एवं आनंद के पुष्पों का वरसात क्यों न करें ? इसलिए जीवन में आमूलाग्र परिवर्तन की आवश्यकता है ।

संगत बुरी असाधुकी, आते हार उपाधि ॥

कुसंग में न पड़ना यह तो मनुष्य के हाथ में । सभी परिवर्तन चाहते है । जीवन को सुखी बनाने के लिए जीव पट को सच्चाई, सादगी, तथा संतोष के ताना बाना से गूंथने का प्रयाश करेंगे तो निश्चित ही सुख सामने से खोजते आयेगा । मनुष्यमात्र का या सांस्कृतिक परंपरा का रक्षण संबर्धन कार्य युगो युगों से संत पुरुष करते आये हैं । आज भी कर रहे हैं । सत्संग तो प्रभु कृपा से मिलता है ।

सत्संग के प्रबल माध्यम से संत लोग मानवजीवन मेंनयी चेतना भरदेते हैं । पल्लवित कर देते हैं, मह का देते हैं । भक्ति में यदि श्रद्धा-विश्वास हो तो भक्ति जीवन में सुगन्ध फैला देती है । सत्पुरुषों की या संतो की एक दृष्टि मनुष्य को बलवान बनादेती है । पापी मनुष्य को पश्चात्ताप के सागर में डुबों कर शुद्ध कर देती है । जिससे उसका नया जन्म सा हो जाता है । जीवन में परिवर्तन करके अन्य के जीवन को वह सुखी बनाता है ।

इस प्रकार सत्संग की फलश्रुति अलौकिक है । सत्संग सभी के लिए कल्याणकारी है । संत अपनी अलौकिक कलाओं या गुणों द्वारा लोगो में सन्मार्ग भर देते है । कहने का तात्पर्य यह कि - हरिनाम का जप एवं पंचविषयों का परित्याग, श्रीहरि की आज्ञा में रहकर, आध्यात्मिकता के उच्चशिखर पर वह मानव पुहुंच जाता है । गुणवान संतो के सत्संग विना, उनमें विलीन हुए विना, एकाकार हुए विना संतो के गुण अपने में उतर सकते नहीं है ।

शास्त्रों में सत्संग की महिमा का खूब गान किया गया है । मानव को सुख शांति प्राप्त करने के लिए सत्संग एवं संतो का साहचर्य सर्वोत्तम बताया गया है । इस कलिकाल में सत्संग प्राप्ति के लिए अपनी भाग्य हो तो ही सम्भव है । सत्संग यह उत्तम साधन है । जिस साधन से हम इह लौकिक पारलौकिक दोनो सुख के साध से युक्त हो सकते है ।

# भगवान श्रीहरि से आचार्य पद का ऐश्वर्य

- घनश्यामभाई वकील ( शाहीबाग-अमदावाद )

मेरे तो आधार सर्वावतारी श्रीहरि के चरणारविंद
मेरे तो आधार अयोध्याप्रसादजी के चरणारविंद
मेरे तो आधार केशवप्रसादजी के चरणारविंद
मेरे तो आधार पुरुषोत्तमप्रसादजी के चरणारविंद
मेरे तो आधार वासुदेवप्रसादजी के चरणारविंद
मेरे तो आधार देवेन्द्रप्रसादजी के चरणारविंद
मेरे तो आधार तेजेन्द्रप्रसादजी के चरणारविंद
मेरे तो आधार कोशलेन्द्रप्रसादजी के चरणारविंद

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण को यथार्थ रुप से जानने वाले आचार्य के हृदय में बसे हुए महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव के चरणकमल में कोटी-कोटी वन्दन ।

अमे एमा ए छे अममा ई रे,
अमे समझो सब भाई बाई रे,
एथी अमे अणगान रहिए रे,
एमां रहिने दर्शन दैये रे.

सर्वावतारी श्रीहरि द्वारा प्रवर्तित आचार्य पद की परम्परा के विषय में चौपाई से स्पष्ट किया जा सकता है । भगवान ने स्पष्ट कहा है कि हममें तथा आचार्यों में लेश मात्र का भी अन्तर नहीं है । सभी हरि भक्त इस बात कोजानें कि मैं अपनी इच्छा से उनमें निवास करता हूँ ।

भगवान द्वारा प्रवर्तित आचार्यो की परंपरा मे अमदाबाद देश के श्री नरनारायणदेव की गादी के छठ्ठे वंशज आचार्यश्री प . प . तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा अपने स्थान पर ता. १५-१०-०४ आश्विन शुक्ल द्वितीया के दिन सप्तमाचार्य के रुप में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजको दिव्य देह से आकाश में पधारे हुए देवतागण तथा भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में तथा श्री लक्ष्मीनारायण देव के पीठाधपिति तथा संत ब्रह्मचारी, पार्षद तथा देश विदेश के एकांतिक भक्तों की विशाल उपस्थिति में महाराजश्री द्वारा पगड़ी पहनाते समय समग्र वातावरण गमगीन बन गया था तथा तालियों की गडगडाहट से सारा वातावरण गूंज उठा था । ऐसे सर्वावतारी भगवान के सप्तमाचार्य जो भगवान के अपर स्वरुप प.पू. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के चरण कमलमें साष्टांग दंडवत प्रणाम ।

धर्मकुल ने जे अनुसरे त्यागी
गृहीनर कोई नार,
परिश्रम बिना ते पामशे अपार
भव नो पार ।

श्री स्वामिनारायण भगवान ने आचार्य में ऐसा दैवत्व भरा है कि जीव के कल्याणार्थ तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए धर्मवंशी आचार्य जगत में प्रथम आधार स्तंभ है । आत्यंतिक कल्याण तथा मोक्ष के लिए भगवानने मन्दिरो में मूर्ति प्रतिष्ठा की है । कालान्तर में भी जिन मूर्तियों में धर्मवंशी आचार्य प्राण प्रतिष्ठा करते हैं वे ही मूर्तियां सेवा-पूजा के योग्य हैं ।

साधु तथा ब्रह्मचारी को भी दीक्षा देने का कार्य भी आचार्यश्रीके अधिकार में कहा गया है ( शि.प. श्लो. १२८ ) । इस प्रकार भगवान श्रीहरि के द्वारा दी गयी परम्परा के सप्तमाचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी को -

मन कर्म वचने मानजो एमा नथी संशय लगार,
एह द्वारे मारे अनेक नो आज करवो छे उद्धार ।

तो आइये हम सभी सहभागी बनकर धर्मकुल की पवित्र परम्परा में दिव्य धर्मकुलना द्वारे रे लोल.....

# सत्संग समाचार

## अहमदावाद मंदिर में धनुर्मास महोत्सव

सर्वोपरी श्री नरनारायणदेव के सन्मुख प्रसादी की दिव्य सभा मंडप में प.पू. निवृत आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सांनिध्य में हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में ता. १५-१२-०४ से पवित्र धनुर्मास का शुभारंभ हुआ । प्रतिदिन प्रात: श्री स्वामिनारायण महामंत्र की गूंज से सम्पूर्ण वातावरण दिव्य बन जाता है। कडक ढन्डी में भी आबाल नरनारी हरिभक्त प्रात: काल नियमित मंदिर में धुनि का लाभ लेने आते हैं । रंगमहल घनश्याम महाराज के सन्मुख, सभामंडप में ऐसी धुनि की गगन भेदी ध्वनि होती हैं कि सारा अहमदाबाद शहर रोमांचित हो उठता है । धुनि लिखाने वालेभी लाभ लेना भूलते नहीं । सम्पूर्ण मास तथा दैनिक धुनि के कितने ही यजमान बने है अभी भी बनते जा रहे हैं । यथार्थ रुप से ऐसा अवशर मिलना जीवन की अहोभाग्य है । प.पू. आचार्य महाराजश्री निवृत्त तो हो गये लेकिन धार्मिक प्रवृत्ति तो और अधिक हो गयी है । आपकी नियमितता सभी को खीचलाती है । देव तथा आचार्य श्री के दर्शनार्थ खूब तान होती है । सभा मंडप में धुनि बोलने वाले संत-हरिभक्त पहले सुन्दर नंद संतो के कीर्तन गाते है । बाद में धुनि से वातावरण आनन्दमय बन जाता है । पू. महंत स्वामी प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री दोनों के विदेश में धर्मयात्रा पर हनो से दोनों कोठारी स्वमी ब्रह्मविहारीदासजी एवं सत्यप्रकाशदासजी इस प्रसंग पर बडी कुशलता से धर्म सत्संग सभा का तथा धुनि का आयोजन करते हैं । संत, हरिभक्त तथा कोठार के स्टाप के सभीजन सेवा में सहभागी बने हैं ।

*- धर्मप्रकाशदास*

## जेतलपुर मंदिर में धनुर्मास में धुनि महोत्सव

श्रीहरि के दिव्य चरणों से अत्यन्त पवित्र तीर्थ भूमि जेतलपुर धाम में श्री रेवती बलदेव श्री हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्यमें दोनो आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से धनुर्मास का १५-१२-०४ से श्री स्वामिनरायण महामंत्र की धुनि प्रारंभ हुई है । स.गु. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से अनेक हरिभक्त धुनि के यजमान बनकर धुनि में भाग लेने उमड़ पड़ते है । संस्कृत पाठशाला के संत तथा महंत स्वामी के मंडल के संत तथा गाँव के एवं गाँव के बाहर के कितने ही हरिभक्त श्रीहरि के नाम स्मरण का दिव्यानंद प्राप्त कर धनुर्मास में पुण्य कमाने के लिए श्रद्धासे लाभ ले रहे है ।

*- पुजारी - ब्रजवल्लभदास*

## कांकरिया (रामबाग) मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से काली चौदस के दिन श्री बालस्वरुप कष्टभंजन देव के समक्ष मारुति यज्ञ संपन्न किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने वरद् हाथों से पूर्णाहुति किये । इस के बाद भव्य सभा में प्रभमबार आचार्य पदारुढ होने के बाद सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

लाभ पांचम के शुभ दिन आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित बाल स्वरुप कष्ट भंजन देव का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजने षोडशोपचार से पूजन करके अभिषेक एवं आरती किये थे । सभी को इस दिव्य दर्शन का लाभ मिला । जिस मूर्ति को धर्मवंशी आचार्य प्रतिष्ठित करते है उस मूर्ति में देव प्रत्यक्ष रुप से विराजमान रहते हैं ।

हजारों हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लिये । पूज्या गादीवाला, पूज्य लालजी महाराजश्री पूज्या श्रीराजा भी अपने कुल देवता के दर्शनार्थ पधारे थे । सभी को दर्शन का तथा आशीर्वाद का लाभ मिला । महंत स्वामी गुरुप्रसाद दासजी कोठारी आनंद स्वामी ने अच्छी व्यवस्था की थी । पूजारी देव स्वामीने ठाकुरजीका अद्‌भुत श्रृंगार किया था । सभी दर्शन करके धन्य हो गये ।

*-परेश पटेल*

## हिंमतनगर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्च महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में मार्गशीर्ष शुक्ल-६ के दिन श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । महंत स्वामी आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से प.भ. रेवाभाई देवाभाई तथा प.भ. जे. डी. पटेल यजमान थे । पूजारी धर्मकिशोर स्वामी ने ठाकुरजी को खुब उत्तम ढंग से अलंकृत किया था । सभी दर्शन का लाभ लिये थे ।

*- पूजारी स्वामी*

### ईडर मंदिर में विविध उत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ईडर श्री स्वामिनारायण मंदिर में स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाद दासजीकी प्रेरणा से उत्तम सत्संग चल रहा है । श्री गोपीनाथ, श्रीहरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में अन्नकूट आदि दर्शन का सभी को लाभ मिला । श्री नरनारायण देव देश के भीतर श्री स्वामिनारायण मंदिर कुकडिया में अन्नकूट एवं सभाका आयोजन किया गया । कोठारी सत्यसंकल्पदासने सभा का उद्‌बोधन किया ।

*- को. स्वामी ईडर*

### सापावाडा मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी प्रेमस्वरुपकी प्रेरणा से कार्तिक शुक्ल पूनम के दिन तुलसी विवाह का सुन्दर आयोजन किया गया । गांववासी लोग दर्शन का लाभ करके धन्य हो गये ।

*- पा. मुकुन्द भगत*

### धरियावद राजस्थान

ता. २९-११-०४ के दिन जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी प.भ. महेन्द्रभाई शर्मा के महेश ओटोमोबाईल्स के उद्‌घाटन प्रसंग पर पदार्पण किये थे । जिस प्रसंग पर एक सुंदर सभा का आयोजन किया गया था । स्वामीने मूल सम्प्रदाय तथा धर्मकुल की महिमा की उपदेशात्मक बात की । सैकडों हरिभक्त सभा में धर्मलाभ लेने पधारे थे । पु. भक्तिनंदनदासजी ने ठाकुरजीकी आरती उतारी थी बाद में शो-रुम का उद्‌घाटन किया गया था ।

*- अर्जुनसिंह पवार*

### श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा

सर्वावतारी इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्रीहरि के चरणारविंद से पावन भूमि में दिव्य एवं अतिरमणीय मंदिर का निर्माण पूर्ण हो गया है जिस में मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में विविध धार्मिक कार्यक्रम ता. २१-१-०५ से २७-१-०५ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के बरद हाथों से सम्पन्न होगा । जिसका लाभ सभी हरिभक्त ले सकते है ।

संपर्क : महंत स्वामी
विजयप्रकाशदास
श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर -
जमीयतपुरा
फोन : २३९७१३४५
श्री स्वामिनारायण मंदिर
नारायणघाट फोन : २५६२५९१८.

### ट्रस्ट का समाचार

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी केळवणी ट्रस्ट संचालित श्री सहजानंद माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूल में कक्षा ८ वीं में अभ्यास करती कु. सोनी श्वेता बंसीलाल ता. २-१२-०४ को ध्रांगध्रा में आयोजित अन्डर १४ एथ्लेटिक्स स्पर्धा ( राज्य कक्षा बालिकाओं ) की ऊँची कूद में द्वितीय स्थान प्राप्त करके स्कूल तथा संस्थाका गौरव बढाया है । इसलिए धन्यवाद के पात्र हैं ।

उपरोक्त स्कूल में कभा ८ में अभ्यास करती हुई कु. महेल चेतनभाई शाहने इसवर्ष दिल्ली में खेली गयी सब जूनियर क्रिकेट स्टेट लेवल ( महिला ) में खेली थी परिणाम स्वरुप पूना में खेली गयी नेशलन सबजूनियर क्रिकेट नेशनल टीम में पसंदगी की गयी है । जिसने स्कूल तथा संस्थाका नाम गौरवान्वित किया है । ये धन्यवाद के पात्र है । *- आचार्यश्री सहजानंद माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विभाग*

### वणझर मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव देश के अहमदाबाद जिले में वणझर गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का नया निर्माण कार्य हुआ । ता. ३०-११-०४ के दिन भव्य शोभायात्रा में प.पू. आचार्य महाराजश्री विराजमान होकर समस्त गाँव में विचरण करके सभी को दर्शन का लाभ दिये और सत्संग सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये । ता. १-१२-०४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके बरद हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी और आरती उतारी गयी । समस्त आयोजन स्वामी स्वयं प्रकाशदासजी गुरु स्वा. श्रीहरिदासजी की प्रेरणा से किया गया ।

*- आर. सी. पटेल*

### श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज

यहाँ पर ३५ भाई -बहनों ने ता. १८-११-०४ से २१-११-०४ तक जेतलपुर, डभाण, वडताल की पदयात्रा पूर्ण की थी जिससे भगवान की प्रसन्नता प्राप्त की थी ।

*- शंभुभाई ही. पटेल*

### श्री सहजानंद गुरुकुल झीलवाणा (जि. पाटण)

झीलवाणा सहजानंद गुरुकुल में संचालक श्री ब. वासुदेवानंदजी

(छपैया) तथा पू. ब्र. गवैया स्वामी रामकृष्णानंदजी तथा संत मंडल एवं गुरुकुल परिवार ने सभा का आयोजन किया जिसमें श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जो सप्तम आचार्य पद पर आरुढ हुए है जिस के सन्दर्भ में तथा आपश्री की प्रसन्नता हम सब पर बनी रहे साथ में सत्संग का खूब विकास हो ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना करके, मूल सम्प्रदाय का परिचय संतो ने दिया। सभी को गादी अभिषेक का खूब आनंद हुआ।

*- आचार्यश्री झीलवाणा*

### देवकाका गोलीया थोबाउ (राजस्थान)

यहाँ श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पर सप्तम आचार्य पद पर प.पू.ध.धु. आचार्य कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को पट्टाभिषिक्त किया गया जिसके उपलक्ष्य में वाली प्रदेश थोबाउ, जेलातरा, दांतीवास, देवदाका गोलिया वाटेरा, जोधावा तथा वापा आदि गाँवो के हरिभक्तों मे अत्यानंदका उत्साह फैल गया था। सभी हरिभक्त वाली मंदिर श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज की छत्रछाया में रहकर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में व्यवहार करते हुए सत्संग की प्रवृत्ति करने की प्रतिज्ञा लिये है।

*हरनाथरामसुथार मोहनलाल वापा*

### वाली (राजस्थान) मंदिर में योजित युवाशिबिर

वाली श्री स्वामिनारायण मंदिर मे ता. १-१०-०४ के दिन प.पू.ध.धु. महाराजश्री की (लालजी स्वरुप में) अध्यक्षता में युवा सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था। अगल-बगल के गाँव के बहुत सारे नवयुवान इस शिबिर में भाग लिये थे। प्रथम अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी एवं पू. पी.पी. स्वामीने मारवाड के सत्संग को शुद्ध तथा निष्ठावान बताया और भगवान नरनारायणदेव के प्रति वफादारी भी बतायी। प.पू. महाराजश्रीने तो यहाँ के सत्संगियों का प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न हुए और हार्दिक आशीर्वाद दिए। बाद में ऐसे कार्यक्रम में प्रति ५ मास में आनेका वचन दिये। यहाँ के परम भक्त ओझा उच्चकोटि के भक्त हो गये हैं। जिनका उल्लेख भक्त चिन्तामणि में १२० वें प्रकरण में किया गया है। जो सर्वोपरि श्रीजी महाराज के साथ १८ वर्ष तक सेवा में थे। १६५ वर्ष आयुष्य ऊोग कर बाद में श्रीहरि के धाम में गये। वर्तमान में उनके वंशज जोधावास में भवरलाल खेताजी ओझा एवं अमराजी धनाजी ओझा है। यहाँ महंत स्वामी निर्मलदासजी सा. हरिप्रसादजी तथा संत मंडल ठाकुरजी की पूजा करते हैं। सभा का आयोजन यहाँ के महंत स्वामी एवं बिलिया के संत मंडल ने किया।

*- शा. विजयप्रकाश*

### महेसाणा मंदिर

नव निर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में पू. महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामीकी प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव मंडल के सहयोग से ता. ८-१०-०४ को समूह महा पूजा तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें १५० जितने हरिभक्तों ने भाग लिया। जेतलपुर से महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं के. पी. स्वामी ईश्वर स्वामी ने प्रवचन करके सभी को धर्मका लाभ दिया।

*- महंत स्वामी उत्तमप्रितमदासजी*

### दिल्ही मंदिर में ११वां पाटोत्सव धूम धामसे सम्पन्न

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यू दिल्ही गुजरात विहार पार्क में ११वां पाटोत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २९-८-०४ को प्रातः ८ बजे सर्वोपरि भगवान घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक सम्पन्न किया गया। पुजारी संत भी उपस्थित रहे। जिस में मुख्य यजमान प.भ. शरदभाई टांक, प.भ. विपिनभाई बडोदरिया, तथा जयंतीभाई पटेल थे। सभी भक्तों ने महापूजा का लाभ लिया। बाद में अन्नकूट आरती एवं प्रासंगिक सभा सम्पन्न हुई। नारायणघाट के महंत स्वामीने सुन्दर कथा का रसपान कराया। बाद में हरिभक्तों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। को. भूपत भगत ने सुन्दर सेवा कार्य किया।

*- माधव स्वामी*

### महेसाणामें सत्संग सभा

यहाँ पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ६-१०-०४ को विशाल सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिस में वडु, विसनगर, मोटी आदरज, कोठा, करजीसण, डांगरवा, कलोल, जुंडाल, ओडा, वडा स्वामी, पानसर, बोरीसडा, धानज, रामनगर, भावपुरा, सईज, पतासणा, सरढव, खोरज इत्यादिगावों के हरिभक्तों ने सत्संग सभा का लाभ लिया। जिसमें महंत स्वामी (धरियावाद) आदरज से राम स्वामी, विसनगर से

उदयनभाई महाराजाने सभा को संबोधित किया । मूल सम्प्रदाय की परम्परा को बताया । निश्चय, पक्ष को समझाया । श्री विनयभाई, श्री महेन्द्रभाई, श्री जगदीशभाई इत्यादिलोगों ने सेवा कार्य किया ।

*- शैलेशभाई पटेल*

### कालियाणामें प.पू. लालजी महाराजका पदार्पण

इस गाँव में भाद्रपद कृष्ण ११ दशी के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । जिनका स्वागत गाँव के लोगों ने उत्तम ढंग से किया । बाद में लालजी महाराजने ढाकुरजी की आरती उतार कर ६० घरों में पदार्पण किये थे । हरिभक्त अपने घरों में महाराजश्री के पद्मार्पण से खूब प्रसन्न हुए । को. श्री भीखुभाई, श्री अरजणभाई, श्री डाह्याभाई आदि इस प्रसंग में प्रेरणा रुप रहे । धनुर्मास में मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को १२ धन्टे की धुनि की गयी । धनुर्मास में प्रभात फेरी धुनि का कार्यक्रम श्री डाह्याभाई की प्रेरणा से किया गया । *- प्रकाश मोरी*

### महुन्द्रा गाँव में व्यसन मुक्ति कैम्प

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गांधीनगर जिला गाँव महुन्द्रा में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण कार्य चालू है । शा. हरिजीवनदासजी (गु. शा. हरिकेशवदासजी) के मार्गदर्शन में मंदिर एवं सत्संग विकाश दोनो प्रगति के मार्ग पर है । यहाँ व्यसन मुक्ति का कैम्प लगाया गया - जिसमें तमाकू, मसाला वीडी इत्यादि से कैन्सर आदि रोगो की उत्पत्ति होती है सचित्र वताकर व्यसन मुक्त किया गया । इस के साथ ही भगवान नरनारायण के आश्रित बनाये गये थे । *- शा. हरिजीवनदास*

### डांगरवा (वांटो)

यहाँ अपने मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गादी पदाधिरुढ केनिमित्त आश्विन शुक्ल १४ को शरदोत्सव के शुभदिन रात्रि में ८ से १० बजे तक रास, कीर्तन किया गया तथा शुक्ल ९-१० को ४८ घंटे तक महामंत्र की धुनि की गयी थी । सभी हरिभक्त हर्षोल्लास के साथ इस प्रसंग को मनाया । समस्त गाँव वासियो में धर्मकुल के प्रति उत्तम महिमा है ।

*- डाभी मफाजी सरदारजी*

### संप्रदाय का गौरव

श्री घनश्यामभाई के पुत्र श्री संजयभाई शाह एम.बी.बी.एस., एम.एस., डी.एन.बी., को बी. राममूर्ति गोल्डमेडल (सर्जरी) माननीय राष्ट्रपति ए.पी.जे. कलाम (राष्ट्रपति) द्वारा गतवर्ष में अर्पण किया गया था । सम्प्रदाय द्वारा भी जिनका संमान किया गया था । वर्तमान में एशिया । पेसिफिक के प्रोफेसेनल हुजर में पृ.क्र. ३७० पर जिनकी सिद्धियों को दर्शाया गया है । जिनका खूब-खूब अभिनंदन ।

### बापुपुरा (माणसा)

यहाँ श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान हरिभक्तों द्वारा नित्य धनुर्मास में धुनि का आयोजन किया जाता है । जिसमें को. जंगेशभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्य श्री दिलीपभाई, बेचरभाई, जंकितकुमार, आशिषकुमार इत्यादि लोग सभी छोटे-बड़े धुनि में भाग लेने आते हैं । बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित रहते हैं । करीब २० वर्ष से अविरत प्रभात फेरी इस गाँव में होती है । इस गाँव में सत्संगकी सुन्दर प्रवृत्ति चलती है । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं आशीर्वाद से सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है ।

*- कांतिभाई बापुपुरा*

### विरमगाव में बहनो कें मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से विरमगाव में श्री स्वामिनारायण मंदिर (महिलाओं) का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २-१२-०४ के दिन प.पू. आचार्य श्री महाराज के हाथों से सम्पन्न हुआ । जिस में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव तथा श्री राधाकृष्णदेव की मूर्ति प्रतिष्ठित की गयी । ता. २६-१२-०४ से २-१२-०४ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा, हरियाग तथा अखंड धुनिजप यज्ञ का आयोजन किया गया था । कथा के वक्ता स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी थे पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद देकर पूर्णाहुति करायी थी ।

*- सां.यो. आनंदीबा, सां.यो. गीताबा*

### महिला मंडल

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल विरमगांव में मार्गशीर्ष शुक्ल-४ को वचनामृत जयंती के अवशर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ३५ वचनामृत के पारायण का पांच दिवसात्मक आयोजन किया गया था । पारायण की पूर्णाहुति ता. १९-१२-०४ रविवार के दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवाला के हाथों से की गयी । बड़ी गादीवाला ने वचनामृत का रसपान

कराकर बडी संख्या में उपस्थित बहनो के जीवन को सार्थक कर दिया था ।

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल की सभा प्रत्येक एकादशी की रात्रि में बहनों के मंदिर में की जाती है । प्रति एकादशी को प्रातःकाल बहनें प्रभात फेरी निकालती हैं ।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवाला के आशीर्वाद से विरमगांव श्री नरनारायणदेव महिला मंडल में सत्संग एवं भक्ति की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है ।- *सां.यो. आनंदीबा, सां.यो. गीताबा*

## मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

### देरीयाणी (रणजीतगढ)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान यहाँ वर्णि वेष में पधारे थे । यहाँ के सरोवर में स्नान किये थे । और सिंगडिया वछनाग की वेल का भोजन किये थे । ऐसे दिव्य प्रसादी के स्थल पर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में श्रीजी स्वामी, भक्तिविहारी स्वामी, विश्वविहारी स्वामी तथा चराडवा मंदिर के महंत स्वामी के प्रतिनिधि व्रजवल्लभदासजी इत्यादि संतोने कथा का सुन्दर लाभ दिया था ।

### चराडवा मंदिर द्वारा सत्संग प्रवृति

चराडवा मंदिर के महंत स्वमी की प्रेरणा से प.भ. वाघजीभाई के यहाँ सत्संग सभा की गयी । जिसमें श्रीजी स्वामी, तथा मोरबी से संत पधारकर कीर्तन, धूनि, कथा का सुन्दर लाभ दिये । इस प्रकार गांव में अवारनवार कथा सत्संग का आयोजन होता रहता है । महंत स्वा. विष्णुचरणदासजी सुन्दर आयोजन का कार्य किये ।

*- चंदुलाल जी. चावडा*

### श्री स्वामिनारायण मंदिर हळवद

यहाँ पर ता. २-१०-०४ को त्रिमासिक सत्संग सभा का आयोजन प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से किया गया । जिस में श्रीजी स्वामी, भक्तिविहारी स्वामी इत्यादि संत सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण के मूल सिद्धांन्तो को समझाया और व्यसन मुक्ति पर चर्चा की । जिसका सभी को लाभ मिला ।

*- तारवुंदिया ठाकरशीभाई*

### सुरेन्द्रनगर मंदिर में आयोजित रासोत्सव

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामीकी प्रेरणा से आश्विन शुक्ल-१ से पूनम तक मंदिर में भव्य रासोत्सव का आयोजन किया गया था । जिसमें श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्य तथा हरिभक्तों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिया । *- शैलेन्द्रसिंह*

### मकनसर मंदिर में पाटोत्सव

मकनसर मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजका वार्षिक पाटोत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्री के बरद हाथों से कार्तिक शुक्ल-१ के दिन धूमधाम से सम्पन्न किया गया ।

इस मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से मोरबी की सांख्ययोगी श्री राजकुंवरबा तथा सां.यो. उषाबाने यजमान बनकर उत्तम लाभ लिया था। इन सभी के आमंत्रण का मान रखकर प.पू.अ.सौ. गादीवालाने पधारकर सभी बाहनों को आशीर्वाद दिया था । इसके साथ इस कार्यक्रम में प्रायः सभी मंदिरों की सां.यो. बहने उपस्थित रहीं । त्रिदिवसात्मक श्रीमद्भागवत कथा के दशमस्कन्ध का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता पद पर स्वा. रामकृष्णदासजी थे। पाटोत्सव के शुभ अवशर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारकर अपने हाथों से अभिषेक करके, आरती उतारकर सभा में सभी को आशीर्वाद दिये थे । इस उत्सव में को. स्वामी जयप्रकाशदासजी, पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, राजेन्द्रप्रसादजी खूब परिश्रम किये थे ।

*- पार्षद प्रवीणभगत*

## विदेश सत्संग वृत्तान्त

### बोल्टेन में प्रथम त्रिदिवसीय सत्संग शिबिर

यहाँ बोल्टन (U.K.) शहर में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भुज मंदिर के महंत स्वामी के आशीर्वाद से ता. १७ से १९ सितम्बर तक तीन दिन तक सत्संग युवा शिबिर का आयोजन किया गया था । संतो के सहकार से बोल्टन, कार्डिफ तथा ओल्डहाम के युवक युवतियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर भाग लिया है । जिस में वचनामृत, कीर्तन, भक्ति श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित नव मंदिरो तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री एवं गादी की महिमा का गुणगान किया गया । कार्डिफ के श्री नरनारायणभाई

तथा बोल्टन के श्री मावजीभाई ने उत्तम सेवा की । प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से खूब सुन्दर सत्संग की प्रवृत्ति हो रही है ।

*- मितेश वालजीभाई हालाई तथा हीरालाल रामजी भूडिया*

**शिकागो (I.S.S.O.) मंदिर में तुलसी विवाह**

श्री स्वामिनाराय भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से कार्तिक शुक्ल-१५ देव दिवाली के दिन २६-११-०४ को तुलसी विवाह का सुन्द र आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर वर पक्ष के ठाकुरजी के पयजमान पद पर श्री रेवाभाई पटेल तथा कन्यापक्ष के तुलसीमाता के यजमान पद पर श्री हर्षदभाई पटेल थे ।

इस प्रसंग का दर्शन करने हेतु हजारों भाविक उमटे थे । पूजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी तथा हरिनंदनदास ने चातुरमासकी पांचो आरती करके सभी को दीव्यानंद दिया । पू. महाराजश्री की आज्ञा से प्रति शनिवार को सत्संग सभा की जाती है । जिससे मूल सम्प्रदाय का सच्चा ज्ञान मिलता है ।- *श्री न.ना. युक मंडल शिकागो*

**श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (I.S.S.O., U.K.)**

यहाँ लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव पीठस्थान की प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी तथा प.पू. लाली राजा यहाँ के U.K. मंदिर में श्री नरनारायणदेव महिला मंडल ब्राईटन आयोजित प्रसंग पर पधारे हुए थे । जिसकी पूर्णाहुति प्रसंग पर २५-१२-०४ को दर्शनार्थ पधारे थे । लेस्टर मंदिर में महाराजश्री का उत्तम स्वागत किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने मूर्ति प्रतिष्ठा करके श्री हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारी थी। प्रमुखश्री जयंतीभाईने सभी हरिभक्तों का प्रतिनिधित्व किया । और पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया ।

प.पू. लालजी महाराजश्री सभा में स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी रचित छन्द अपने सुमधुर कंठो से गाकर सुनाये और आशीर्वाद दिये ।

सभी हरिभक्तों ने प.पू. लालजी महाराजकी सामूहिक आरती की । सायंकालीन सभा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाने सभी बहनों को दर्शनका लाभ दिया ।

*- हेमराज चोटलिया लेस्टर मंदिर*

---

**अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि**

**अमदावाद-अमराईवाडी :** प.भ. डाह्यालाल नाथालाल ( भगत ) मोदी ता. २९-११-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

**अमदावाद-मेधाणीनगर :** प.भ. मोहनभाई जसमतभाई पटेल ता. १९-१२-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

**अमदावाद-इसनपुर :** प.भ. राजेशकुमार प्रहलादभाई चौहाण ता. २६-१२-०४ के दिन श्रीहरिका स्मरण करतेअक्षरनिवासी हुए है ।

**अमदावाद (हर्षदकोलोनी बापुनगर :** श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. मोहनभाई ठुम्मर ( उ. ८३ वर्ष ) ता. १२-१२-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

**सोजा (ता. कलोल, जि. गांधीनगर) :** प.भ. लक्ष्मणभाई जोईताराम पटेल ( मंदिर के ट्रस्टी भूतपूर्व ) के बडेभाई प.भ. कचराभाई जोईताराम पटेल ता. ११-११-०४ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

**अमदावाद :** प.भ. दीपककुमार केशवलाल भावसार ता. ५-११-०४ को श्रीहरिका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

**विरमगांव :** गं.स्व. रुक्ष्मणी बहन मणीशंकर पाठक श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

**गोधरा-पंचमहाल :** यहाँ मंदिर के को. प.भ. घनश्यामभाई पटेल की धर्म पत्नी अ.सौ. मंजुलाबहन ता. २८-१०-०४ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है ।



जेतलपुर अक्षरमहोल वाडी श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय में सरस्वती पूजन करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में मासंत यज्ञ की पूर्णाहुति करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



गवाडा (विरमगाम) में पारायण के अवशर पर मंदि में आरती उतार हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



धनुर्मास के दौरान प्रातः भगवान स्वामिनारायण की मंगलकारी धून में हजारो हरिभक्तों से भरा हुवा सभामंडप ।



विरमगाम श्री स्वामिनारायण मंदिर ( बहनोका ) में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



Praful Kharsani

नवा वणझर ( सरखेज ) गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्रीहरि की दिव्य मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।